Vol 6 Issue 5 Nov 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor :4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | November - 2016

GRT Golden Research Thoughts

''माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) आयामों के सन्दर्भ में अध्ययन''

योगेश्वर प्रसाद शर्मा[1] , डॉ. सतीश कुमार सिंह[2]
[1]शोध छात्र, शिक्षा विभाग, आई. एफ. टी. एम. विश्वविद्यालय, मुरादाबाद।
[2]शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, आई० एफ. टी. एम. विश्वविद्यालय, मुरादाबाद।

सारांश

भारतवर्ष के माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत् छात्रों की आयु 11–17 वर्ष तक होती है। अर्थात् आयु का वह काल जिसमें केवल चिन्गारी दिखाने की आवश्यकता होती है। इस अवस्था को किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। जिसके सम्बन्ध में स्टेनली हाल ने कहा है कि किशोरावस्था अत्यंत दबाव, तनाव तूफान, और संघर्ष की अवस्था है। इसीलिये माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत् छात्रों की उर्जा उचित कार्यो में, समाज की सेवा में, देश की प्रगति में, देश की उन्नति में, तथा शिक्षा के प्रति शैक्षिक रुचि उत्पन्न करने मे तथा उनके व्यक्तित्व के विकास में प्रयोग की जा सकती है। माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक रुचि को उनके व्यक्तित्व निर्माण मे कैसे लगाया जाय, जिससे वे देश की उन्नति में भागीदार बन सके। शोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुए शीर्षक ''माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) आयामों के सन्दर्भ में अध्ययन'' अंतर्गत शोध कार्य किया।इस शोध कार्य को मुरादाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालयों के 100 छात्रों पर किया गया तथा इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्रो की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) आयामों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना :

भारतीय शिक्षा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है जिसमें शिक्षा के स्वास्थ का वर्णन हमे 'वेदों' में मिलता है। प्राचीन काल में शिक्षा द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था । उसी प्रकार आज आधुनिक शिक्षा भी बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। बालक का सर्वांगीण विकास विद्यालय की चारदीवारी के अन्दर सम्भव नहीं है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है, जब उसकी रूचियों और व्यक्तित्व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उसे शिक्षित किया जाय। वर्तमान शिक्षा में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का विशेष महत्त्व है, जिसमें अधिगमकर्ता पर विशेष ध्यान दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी उच्च शिक्षा से पूर्व की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुये कहा गया है कि राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की विशेषताओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। माध्यमिक विद्यालयों में सम्पूर्ण देश में 10+2 की सरंचना लागू है। माध्यमिक विद्यालयों में भौतिक सुविधायें शिक्षक, पाठयक्रम, सरंचना, समान होने पर भी विद्यार्थी शिक्षा में एक समान रूचि नही लेते है। जिसका उनके व्यक्तित्व कारकों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

शोध समस्या कथन :

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी) आयामों के सन्दर्भ में अध्ययन।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण :

1.माध्यमिक स्तर :

माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 9 से 12 तक शिक्षा ग्रहण करने वाले बालकों से है। कक्षा 9 एवं कक्षा 10 उच्च माध्यमिक तथा कक्षा 11 व 12 उच्चतर माध्यमिक स्तर कहा जाता है। अतः कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा देने वाले विद्यालयों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952.53) के अनुसार – 'वह शिक्षा जो कि प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के बाद व महाविद्यालय शुरू होने से पहले समाप्त होती है उसे माध्यमिक शिक्षा कहते है।' इस प्रकार की शिक्षा 11. 17 वर्ष के बच्चों को प्रदान की जाती है।

2. शैक्षिक रूचि :

शैक्षिक रूचि सीखने सिखाने की

प्रक्रिया को संचालित करने वाली केंद्रीय शक्ति होती है जिसका लक्ष्य विद्यार्थियों में सीखने की रूचि को विकसित करना होता है। शैक्षिक रूचि बच्चो को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती, बल्कि उनके दृष्टिकोणों, उनकी प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है । यह उनके व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा भी निर्देशित करती है।

जे०एस०,रॉस (1951) के अनुसार, "जो वस्तु हमसे सम्बंधित होती है अथवा प्रयोजन रखती है हमारी रूचि उसी में होती है।"

बी० एन० झा (1946) के अनुसार "रुचि वह स्थिर मानसिक तंत्र है जो ध्यान की एकाग्रता बनाये रखते हुए कार्य को चालू रखता है।''

सेक्स के अनुसार– ''किसी अन्य कार्य की तुलना में एक कार्य को पसन्द करना ही रुचि कहलाती है।''

3. व्यक्तित्व के अन्तर्मुखी एवम बहिर्मुखी आयाम :

व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग साधारण बातचीत के दौरान बहुतायत से किया जाता है। साधारण बातचीत मे प्रयुक्त व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता है जिसे सभी व्यक्ति विभिन्न परिस्थितयो में व्यवहार करने तथा पारस्परिक सम्बन्धो की दृष्टि से विशेष महत्त्व देते है,सामान्य अर्थो में व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन रंग रूप वेश भूषा बातचीत के ढंग, कार्य व्यवहार तथा विभिन्न गुणों के संयोजन से लगाया जाता है। व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी पर्याय पर्सनालिटी (Personality) शब्द लेटिन भाषा के शब्द पर्सोना (Persona) से बना है जिसका अर्थ मुखोटा है। व्यक्तित्व व्यक्ति के विचारों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का योग है।

जी० डब्लू० ऑलपोर्ट (1948) के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।"

मनोवैज्ञानिको ने मनोवैज्ञानिक लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है इसमें जुंग (Jung) का वर्गीकरण सबसे अधिक मान्य है उन्होने अपनी पुस्तक "Psychological Type" में व्यक्तित्व के निम्न दो प्रकार बताये हैः–

(1) अन्तर्मुखी (Introvert) – अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लक्षण, स्वभाव, आदतें, अभिवृतियाँ और अन्य चालक वाह्य रूप में प्रकट नहीं होते हैं। इसलिये ऐसे व्यक्तियों को अन्तर्मुखी कहा जाता है। इनका विकास वाह्य रूप से न होकर आन्तरिक रूप से होता है।

(2) बहिर्मुखी (Extrovert) – बहिर्मुखी व्यक्तित्व के मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों से विपरीत स्वभाव के होते हैं।इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का झुकाव वाह्य तत्वों की ओर होता है। ये संसार के भौतिक और सामाजिक लक्ष्यों में विशेष रूचि रखते हैं। वे विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं।

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन हेतु जुंग द्वारा वर्गीकृत दोनो प्रकार के व्यक्तित्व आयामों अन्तर्मुखी एवम् बहिर्मुखी को आधार माना है।

अध्ययन के चरः

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को समावेशित किया गया है–
1.स्वतंत्र चर– शैक्षिक रूचि 2.आश्रित चर– व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी– बहिर्मुखी)

शोध के उद्देश्यः

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व आयामों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाः

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व आयामों से कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

शोध विधिः

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध सीमांकनः

(1) शोध कार्य मुरादाबाद शहर के पाँच माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमीत किया गया है।
(2) शोध अध्ययन में केवल कक्षा 10 के छात्रों को ही लिया गया है।

शोध न्यादर्शः

यादृच्छिक पद्धति द्वारा शोधकर्ता ने मुरादाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालयों को शोध की जनसंख्या मानते हुए, सभी विद्यालयों की एक सूची बनाकर, उसमें से 05 विद्यालयों का चयन यादृच्छिक 'लॉटरी' विधि से कर लिया। अब चयनित विद्यालयों से इसी विधि द्वारा 100 छात्रों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रस्तुत शोध हेतु दो प्रमापीकृत शोध उपकरण प्रयुक्त किए गए– (1) डॉ0 एस० पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक रुचि प्रपत्र (2) डॉ० पी० एफ० अजीज एवं डॉ० रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रश्नावली मापनी।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ:

शोध कार्य में विश्वसनीय परिणाम निश्चित करने हेतु उच्च एवं विश्वसनीय सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आँकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण :

तालिका

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनके अन्तर्मुखी– बहिर्मुखी व्यक्तित्व के सह–सम्बन्ध का अध्ययन :

क्रम सं०	क्षेत्र	N	M	S.D.	सहसम्बन्ध गुणांक	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	माध्यमिक स्तर के छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि	100	34.99	3.98	0.309118	3.22	0.01
02	माध्यमिक स्तर के छात्रों का शिक्षा के प्रति अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व	100	14.03	9.34			

तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों की (N=100) शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि के परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 34.99 एवं मानक विचलन 3.98 ज्ञात हुआ तथा परीक्षण अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का मध्यमान 14.03 एवं मानक विचलन 9.34 प्राप्त हुआ। छात्रों का शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनकी अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सह–सम्बन्ध गुणांक 0.309118 की गणना की। यह जानने के लिए कि छात्रों का शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनकी अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं, के लिए क्रांतिक मान ज्ञात किया जो 3.22 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनकी अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व से 0.01 स्तर पर सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया।

ग्राफ

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनके अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व के सह–सम्बन्ध का ग्राफीय अध्ययन :

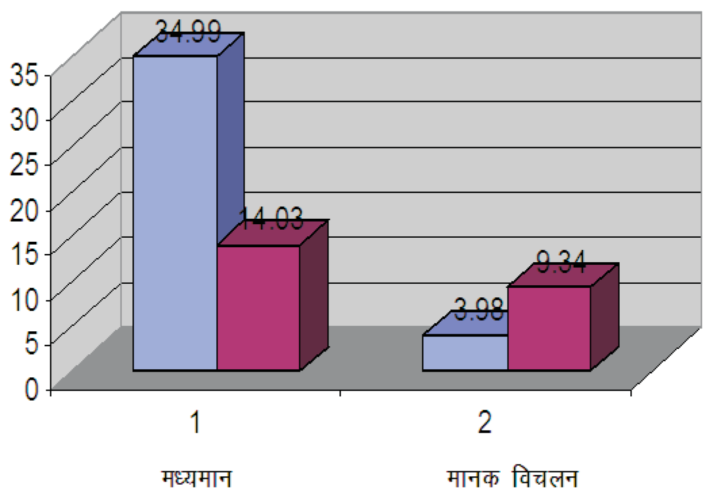

ग्राफ से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों की (N=100) शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि के परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 34.99 एवं मानक विचलन 3.98 ज्ञात हुआ तथा परीक्षण अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का मध्यमान 14.03 एवं मानक विचलन 9.34 प्राप्त हुआ।

शोध परिणाम:

परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर की छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनकी अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व से सार्थक

सह–सम्बन्ध नहीं होता है'–अस्वीकृत की जाती है। क्योंकि माध्यमिक स्तर की छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनकी अन्तर्मुखी बहिमुखी व्यक्तित्व से 0.01 स्तर पर सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष:

छात्रों की शैक्षिक रूचि ही उनकी शिक्षा की नवीन सोच व विचार शक्ति की आधारशिला है। अपनी शैक्षिक रूचि के कारण ही उनमें विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण होता है, अर्थात हम कह सकते है कि छात्रों की शैक्षिक रूचि का घनिष्ठ सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व से है।

शैक्षिक रूचि एवम् व्यक्तित्व के विकास हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव –

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर हम कह सकते है कि शैक्षिक रूचि छात्रों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती, बल्कि उनके दृष्टिकोणों, अभिवृत्तियों, अभिव्यक्तियों एवं प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है । यह उनके व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा भी निर्देशित करती है।

छात्रों की शैक्षिक रूचि एवम् व्यक्तित्व के विकास हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव सहायक सिद्व हो सकते है, जो निम्न लिखित है–

- पाठ्यक्रम को आकर्षक एवं रुचिपूर्ण बनाना चाहिए।
- शिक्षण कार्यो के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में शिक्षण का क्रम सरल से कठिन स्तर की ओर होना चाहिए।
- छात्रों का मानसिक स्तर जाँच कर शिक्षण कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।
- नयी–नयी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करके शिक्षण कार्य को सम्पन्न करना चाहिए।
- छात्रों के सम्मुख आने वाली समस्याओं का निराकरण करते रहना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (References):

1.हॉल जी० एस० (1904) एडोल्सेन्स इटस साइक्लोजी एण्ड इटस रिलेशन्स टू फिजियोलोजी एन्थ्रोपोलोजी सेक्स क्राइम रिलिजन एण्ड ऐजुकेशन(वॉल्यू. I & II) म्यूयॉर्क डी ऐप्लेटन एण्ड क०.
2.रॉस जे० एस० ग्राउण्ड वर्क ऑफ ऐजुकेशनल सॉइकोलोजी लन्दन जार्ज जी हारूप एण्ड क0 1951.
3.झा बी० एस० (1946) मॉडर्न ऐजुकेशनल साइकोलॉजी (रिवाइज्ड) इलाहाबाद इण्डियन प्रेस लि०
4.सेक्स (1979) गिलबर्ट फाउन्डेशन ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च ऐन्गलवुड क्लिफस एन० जे० प्रिन्टिस.
5.ऑलपोर्ट जी० डब्लू० (1948) पर्सनाल्टी–ए साइकोलॉजी इंटरप्रिटेशन, न्यूयार्कः हाल्ट,
6.कार्टर वी० गुड (1993) डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन, न्यूयार्कः मैक्ग्रा– हिल बुक कं०. एडिशन टोकियो एम० एल ० ग्रो हिल कोगाकुशा लि० हाल इंक.
7.गुड कार्टर वी० (1959) डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन (सेकिंड एडिशन) न्यूयार्कः मैक्ग्रा– हिल बुक कं०.
8.जुंग सी० जी० (1971) साइकोलॉजिकल टाइप, कलेक्टेड वर्क्स ऑफ सी० जी० जुंग, वोल्युम 6, प्रिंसटन, एन० जे० प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस. आई एस बी एन 0–691–01813–8.
9.कृष्णा, के० पी० (1980) पर्सनालिटी डाइमेंशन ऑफ टुरुन्ट्स. सोसिअल डिफेंस, 16,2,37–41.
10.मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा आयोग), 1952.53.
11.राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986.

योगेश्वर प्रसाद शर्मा
शोध छात्र, शिक्षा विभाग, आई. एफ. टी. एम. विश्वविद्यालय, मुरादाबाद।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org